موضوع الخطبة : **الناقض الرابع: بغض شيء مما جاء به الرسول (صلى الله عليه وسلم)**

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :فيض الرحمن التيمي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

चौथा भंजक: (रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई शरीअ़त की किसी चीज़ में घृणा रखना)

بغض شيء مما جاء به الرسول (صلى الله عليه وسلم)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وسَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون.

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا.

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما.

प्रशंसाओं के पश्चात!

स्र्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोंहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ (धर्म में) अविष्कार की गई बिदअ़तें (नवाचार) हैं,धर्म में अविष्कार की गई प्रत्येक चीज़ बिदअ़त (नवाचार) है,प्रत्येक बिदअ़त (नवाचार) गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाजी है।

धर्म से प्रेम करना ईमान की अनिवार्यता में शामिल है

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरें और उस का आदर करें,उस का आज्ञा मानें और उस के अवज्ञा से बचें,और जान लें कि لاالہ الااللہ اور محمد رسول اللہ की गवाही से अल्लाह और उस के नबी सलल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रेम अनिवार्य हो जाता है।शहादतैन को सत्य दिल के साथ अ़मल में लाने की यह पहचान है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

(قل إن كنتم تحبون الله فاتبعوني يحببكم الله).

अर्थात:हे नबी!कह दो: यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो,अल्लाह तुम से प्रेम करेगा।

अल्लाह के बंदो!इस्लाम धर्म से सत्य प्रेम करने वाले मामिन उस के शिक्षाओं के अनुगमन से पीछे नहीं हटते,बल्कि अल्लाह और रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के समस्त आदेशों का पालन करते हैं,जैसा कि अल्लाह ने फरमाया:

(إنما كان قول المؤمنين إذا دعوا إلى ورسوله ليحكم بينهم أن يقولوا **سمعنا وأطعنا** وأولئك هم المفلحون * ومن **يطع الله ورسوله** ويخش الله ويتقه فأولئك هم الفائزون).

अर्थात:ईमान वालों का कथन तो यह है कि जब अल्लाह और उस के रसूल की ओर बुलाये जोयें ताकि आप उन के बीच निर्णय कर दें,तो कहें कि हम ने सुन लिया तथा मान लिया,और वही सफल होने वाले हैं।तथा जो अल्लाह और उस के रसूल की आज्ञा का पालन करें और अल्लाह का भय रखें,और उस की (यातना) से डरें,तो वसी सफल होने वाले हैं।

अल्लाह तआ़ला ने अपनी पुस्तक में जो निर्णय कर दिया और जिस चीज़ का आदेश दिया है उस से मोमिनों को अपने दिलों में कोई तंगी नहीं होती,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

(فلا وربك لا يؤمنون حتى يحكموك فيما شجر بينهم ثم **لا يجدوا في أنفسهم حرجا** مما قضيت ويسلموا تسليما)

अर्थात:तो आप के पालनहार की शपथ!वह कभी ईमान वाले नहीं हो सकते,जब तक कि अपने आपस के विवाद में आप को निर्णायक न बनायें,फिर आप जो निर्णय कर दें उस से अपने दिलों में तनिक भी संकीर्णता (तंगी) का अनुभव न करें,और पूर्णत: स्वीकार कर लें।

मोमिन वे हैं जो बाह्य रुप से अपने शरीर के अंगों से और आंतरिक रूप से अपने दिल से शरीअ़त की संरक्षण एवं अनुगमन करते हैं,वह इस प्रकार से कि अल्लाह और उस के रसूल सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के निर्णय से अपनी प्रसन्नता दिखाते हैं।

अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि उन्होंने रसूलुल्लाह सलल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना:उस व्यक्ति ने ईमान का स्वाद पा लिया जो अल्लाह के

रब,इस्लाम के धर्म और मोहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम से रसूल होने पर (दिल से) प्रसन्न हो गया।[1]

मनुष्य के लिय यह अनिवार्य है कि इस्लाम धर्म के लिए अपने दिल में विस्तीर्णता एवं खुलापन रखे,उस से प्रसन्न हो और प्रेम करे,क्योंकि वह उस पालनहार की ओर से है जो अपनी शरीअ़त में ह़कीम (तत्वज्ञ) है,अपनी मखलूक़ के हितों से अवगत है,उन पर कृपालु एवं दयालु है,अल्लाह का फरमान है:

(ألا يعلم من خلق وهو اللطيف الخبير).

अर्थात:क्या वह नहीं जानेगा जिस ने उत्पन्न किया?और वह सुक्ष्मदर्शक सर्व सूचित है?

धर्म का प्रेम प्राप्त करने के कारण एवं कारक

अल्लाह के बंदो!जिन मामलों से दिल में धर्म के प्रति प्रेम पैदा होता है,उन में यह जानना भी शामिल है कि अल्लाह ने इस धर्म को अनिवार्य कर दिया,वह अपने बंदो के हितों से अवगत

[1] इस ह़दीस को मुस्लिम (३४) ने रिवायत किया है।

है,जिन आदेशों का आदेश देता है,उन में वह ह़कीम (तत्वज्ञ) और अपने बंदों पर कृपालु है।

इस्लाम धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक कारण उस की उन विशेषताओं एवं गुणों से अवगत होना है जिन के द्वारा पूर्व के धर्मों से यह धर्म प्रमुख है,जिन की संख्या चालीस से अधिक है।[2]

धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक तरीका यह जानना भी है कि जो व्यक्ति इस धर्म से प्रेम रखता और इस पर अ़मल करता है,वह मुक्ति पाएगा और जो व्यक्ति इस से मुँह फेरता है,वह नष्ट होगा।

धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक कारण यह है कि इस धर्म को स्वीकारने वाले अनेक गैर मुस्लिमों की स्थियों पर विचार किया जाए जो अपने ज्ञान के मानक,रंग व वंश,देश एवं धर्म में एस दूसरे से भिन्न होते हैं,यहां तक कि-सोशल मेडिया के इस युग

---

[2] अल्लाह तआ़ला की तौफीक़ से श्रृख्लाबद्ध "इस्लामी शरीअ़त की उतकृष्ट विशेषताएं"के विषय पर उपदेश प्रस्तुत करने का अवसर मिला,ये उपदेश इंटरनेट पर इसी विषय से प्रकाशित हैं।

में-इस्लाम धर्म वही है जिस की ओर सर्वाधिक आकर्षित हो रहे हैं और अपना रहे हैं।

अल्लाह के बंदो!धर्म का प्रेम प्राप्त करने का एक कारण यह है कि इसके उत्तम शिक्षाओं से व्यक्ति अवगत हो जो पुण्य एवं भलाई की दावत देती हैं।यह शरीअ़त हर उस चीज़ की दावत देती है जिस की अच्छाई एवं उत्तमता पर स्वस्थ बुद्धि एवं उत्तम स्वभाव गवाही देती है,और हर उस चीज़ से रोकती है जिस की घृण्ता व निकृष्टता से स्वस्थ बुद्धि एवं उत्तम स्वभाव रोकती है,अल्लाह तआ़ला का फरमान है:

(ومن **أحسن** من الله **حكما** لقوم يوقنون)

अर्थात:और अल्लाह से अच्छा निर्णय किस का हो सकता है,उन के लिये जो विश्वास रखते हैं।

तथा अल्लाह का फरमान है:

(إن الله يأمر بالعدل **والإحسان** وإيتاء ذي القربى وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي يعظكم لعلكم تذكرون)

अर्थात:वस्तुत: अल्लाह तुम्हें न्याय तथा उपकार और समीपवर्तियों को देने का आदेश दे रहा है,और निर्लज्जा तथा बुराई और विद्रोह से रोक रहा है,और तुम्हें सिखा रहा है ताकि तुम शिक्षा ग्रहण करो।

शैख अंब्दुर रहमान बिन सादी रहिमहुल्लाह लिखते हैं:शरीअ़त की शिक्षाएं अच्छे एवं उत्तम अ़मलों,सुंदर व्यवहार और बंदों के हित पर आधारित चीज़ों का आदेश देती हैं,न्याय,श्रेष्ठता व कृपा,दया और पुण्य एवं भालाई पर प्रोत्साहित करती हैं,अन्याय,अश्लीलता व नग्नता और दुश्चरित्रता से रोकती हैं,कमाल (पूर्ण) व जलाल (प्रतापी) की प्रत्येक वे विशेषताएं जिन्हें पैगंबरों ने सिद्ध किया,उस इस्लामी शरीअ़त ने भी सिद्ध किया,और दीनी व दुनयावी हितों पर आधारित जिन आदेशों की ओर अन्य शरीअ़तों ने बोलाई,उन के लिए इस्लाम ने भी प्रोत्साहित किया,और प्रत्येक उपद्रवी कार्य से इस्लाम ने रोका और उस से बचने का आदेश दिया।[3]

---

[3] **थोड़े हेर-फेर के साथ** "الدرة المختصرة في محاسن الدين الإسلامي" **पृष्ठ संख्या:१५,प्रकाशक:** دار العاصمة **,रियाज़ से लिया गया है।**

धर्म से घृणा रखना इस्लाम भंजकों में से है

अल्लाह के बंदो!ईमान के विरुद्ध चीज़ों में से यह भी है कि धर्म से अथवा उस के किसी भाग से घृणा रखा जाए,चाहे यह घृणा किसी आस्था से संबंधित हो अथवा ईबातद (वंदना) अथवा मामलों अथवा व्यवहारों एवं नैतिकता से संबंधित हो,क्योंकि उस से घृणा रखने से उस के उतारने वाले से घृणा माना जाएगा जो कि अल्लाह तआ़ला है,अथवा उसे नकल करने वाले घृणा रखना माना जाता है जो कि मोहम्मद सलल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।अथवा यह आस्था रखे कि ये शिक्षाएं सत्य पर आधारित नहीं हैं,अथवा यह आस्था रखे कि धर्म में सौभाग्य व सफलता नहीं है,ये सब अल्लाह की नीति,उस के कथनों एवं कार्यों में आलोचना करने के दृश्य हैं।तथा यह कि धर्म से घृणा इस्लाम एवं ईमान की वास्तविकता के विरुद्ध है,जिस का मतलब होता है अल्लाह तआ़ला के समक्ष एकेश्वरवाद के द्वारा आत्म समर्पण करना,आज्ञा के द्वारा उस का अनुगमन करना और उस के निर्धारित शरीअ़त से प्रसन्न होना।

धर्म से घृणा रखना काफिरों एवं मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की विशेषता है

अल्लाह के बंदो!सत्य से घृणा रखना काफिरों एवं मोनाफिक़ों (द्विधावादियों) की विशषता है,अल्लाह तआ़ला फरमाता है:

(والذين كفروا فتعسا لهم وأضل أعمالهم * ذلك بأنهم **كرهوا ما أنزل الله** فأحبط أعمالهم)

अर्थात:और जो काफिर हो गये तो विनाश है उन्हीं के लिये और उस ने व्यर्थ कर दिया उन के कर्मों को ।

तथा अल्लाह तआ़ला ने नरक वासियों के प्रति फरमाया:

(وقالوا يا مالك ليقضِ علينا ربك قال إنكم ماكثون * لقد جئناكم بالحق ولكن أكثركم **للحق كارهون**).

अर्थात:तथा वह पुकारेंगे कि हे मालिक!हमारा काम ही तमाम कर दे तेरा पालनहार।वह कहेगा:तुम्हें इसी दशा में रहना है।(अल्लाह कहेगा):हम तुम्हारे पास सत्य लाये किन्तु तुम में से अधिकतर को सत्य अप्रिय था।

अल्लाह के बंदो!शरीअ़त से घृणा उसी समय होती है जब पूरी शरीअ़त से,अथवा उस के अधिकतर भाग से,अथवा उस के किसी छोटे भाग से घृणा रखता है,ये सब निफाक़ (द्विधावाद) एवं कुफ्र है,क्योंकि शरीअ़त का पूर्ण भाग हो अथवा थोड़ा भाग,वे सब अल्लाह की ओर से है।

अल्लाह के बंदो!यह स्पष्ट करने के लिए यह एक लाभदायक प्राक्कथन है कि शरीअ़त से प्रेम रखना अनिवार्य है,इस का प्रेम इस के अवतरित करने वाले के प्रे से होता है,जो कि अल्लाह तआ़ला है,जो व्यक्ति इस प्रक्कथन को समझ ले,उस के लिए अ़मल एवं पैगंबर की जीवनी की सुरक्षा का द्वार खुल जाता है।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आप को क़ुरान की बरकत से लाभान्वित फरमाए,मुझे और आप को उस की आयतों और नीतियों पर आधारित परामर्श से लाभ पहुंचाए,मैं अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा मांगता हूं,आप भी उस से क्षमा मांगें,नि:संदेह वह अति क्षमाशील कृपालु है।

द्वीतीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

अल्लाह के बंदो!अल्लाह का तक़्वा (धर्मनिष्ठा) अपनाएं और जान लें कि धर्म से घृणा रखने का एक प्रकार यह है कि पैगंबर की सुन्नत से घृणा रखी जाए,अथवा सह़ाबा से,अथवा उम्महातुल मोमेनीन (आप सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की पत्नियां) से,अथवा हिजाब व परदा के आदेश से घृणा रखी जाए,अथवा इस बात की ओर बोलाया जाए कि धर्म को जीवन के समस्त भागों से अलग करके इसे केवल नमाज़ रोज़े एवं ह़ज़ जैसी प्रार्थनाओं तक सीमित कर दिया जाए,मामलों एवं राजनीति से धर्म को बाहर रखा जाए,ये सब धर्म से घृणा रखने के विभिन्न रूप हैं,जो कि कुफ्रे अकबर है।अल्लाह का शरण।

अल्लाह के बंदो!हमारे युग में जो लोग धर्म से घृणा रखते हैं उन में धर्मनिरपेक्षता और उदारतावाद और इन जैसे अन्य जीवन प्रणाली के अनुयायी भी शामिल हैं।ये इस बात की दावत देते हैं

कि धर्म को जीवन के समस्त भागों से अलग करके नमाज़,रोज़ा और ह़ज़ जैसी प्रार्थनाओं में सीमित कर दिया जाए,नि:संदेह उन की यह दावत धर्म से उनकी घृणा और उस से असंतोष का प्रतीक है,क्योंकि यदि वे अल्लाह के धर्म से प्रेम करते तो इस अंतर की दावत न देते,उन में से कुछ लोग स्पष्ट रूप से इस की दावत देते हैं तो कुछ लोग अपने घृणा को छुपाए रखते हैं,वे अपने इस व्यवहार के कारण मोनाफिक (द्विधावादी) हैं,ईमान मो दिखाते हैं,किन्तु अंदर से रह़मान की शरीअ़त से घृणा रखते हैं,अल्लाह तआ़ला हमें इस से सुरक्षित रखे।

उन के विचलन एवं गुमराही का एक दृश्य यह है कि वे हिजाब से अपनी शत्रुता प्रकट करते हैं,और जो लोग महिलाओं को न्यायालय एवं शासन का भार देने को ह़राम कहते हैं,उन से ये खुली शत्रुता का प्रदर्शन करते हैं,अपने देशों में एक से अधिक विवाह को रोकने के लिए नियम एवं कानून बनाते हैं,और उन मामलों में महिला एवं पुरुष के बीच समानता का गुहार लगाते हैं जिन में अल्लाह ने अपनी पुस्तक के अंदर दोनों को अलग बताया है।उदाहरण स्वरूप मीरास,पुण्य का आदेश देने और पाप

से रोकने वाले से शत्रुता का प्रदर्शन करते हैं,इसका कारण यह है कि वह अश्लीलता व नग्नता से प्रेम करते और अच्छी आदतों एवं व्यवहारों से घृणा रखते हैं।

धर्म से घृणा एवं प्रेम एक ऐसा कार्य है जो दिल में छुपा रहता है

अल्लाह के बंदो!यह ऐसा भंजक (इस्लाम विरोधी कार्य) है जो दिलों में छुपा रहता है,हृदय जीवित मनुष्य को चाहिए कि अपने आप का अवलोकन करता रहे ताकि उस के दिल में शरीअ़त के प्रति तंगी,अथवा उस के किसी आदेश से घृणा न रहे,इस से पहले कि वह दिन आए जिस दिन क़ब्रों से शवों को जीवित उठाए जाएंगे,दिलों के रहस्य खोल दिए जाएंगे और वही सुरक्षित रहेगा जिसे अल्लाह तआ़ला सुरक्षित रखे।

उपदेश की समाप्ति:

आप यह भी जान लें कि अल्लाह तआ़ला ने आप को एक बड़े कार्य का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

(إن اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تسليما)

अर्थात:अल्लाह तथा उस के फरिश्ते दरूद भेजते हैं नबी पर,हे ईमान वालो!उन पर दरूद तथा बहुत सलाम भेजो।

اللهم صل وسلم على عبدك ورسولك محمد، وارض عن أصحابه الخلفاء، الأئمة الحنفاء، وارض عن التابعين ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين.

हे अल्लाह!हमारे दिलों को निफाक (पाखंड) से,हमारे अ़मलों को दिखावे से और हमारी निगाहों को कदाचार से पवित्र कर दे।

हे अल्लाह!हम तुझ से शांतिपूर्वक जीवन,विस्तृत जीविका और सदाचार की दुआ़ करते हैं।

हे अल्लाह!इस्लाम और मुसलमान को सम्मान दे,शिर्क और मुशिरकों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा फरमा,हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान दे,शिर्क और मुशिरकों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम धर्म के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह! हमें अपने देशों शांति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे ईमामों और हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें

हिदायत का मार्ग दर्शन करने वाला और हिदायत पर चलने वाला बना।

हे अल्लाह समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू करने,अपने धर्म की उच्चता की तौफीक़ प्रदान कर और उन्हें अपने अधीन लोगों के लिए रह़मत का कारण बना।

हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया व आखिरत की समस्त भलाई की दुआ़ मांगते हैं जो हम को ज्ञात है और जो ज्ञात नहीं,और तेरा शरण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत के समस्त पापों एवं कदाचारों से जो हम को ज्ञात हैं और ज्ञात नहीं हैं।

हे अल्लाह हम से मंहगाई,आपदा,बलात्कार,भूकंपों,आजमाइशों और समस्त आंतरिक एवं बाह्य बुरे फितनों को हम से दूर करदे,विशेष रूप से हमारे इस देश से और समान्य रूप से समस्त मुस्लिम देशों से,हे दोनों संसार के पालनहार!

हे अल्लाह!हम से आपदा को दूर कर दे,नि:संदेह हम मुसलमान हैं।

हे अल्लाह!हम तेरा शरण चाहते हैं तेरी उपकारों की समाप्ति से,तेरी सुख के हट जाने से,तेरी अचानक की यातना से और तेरी हर प्रकार की अप्रसन्नता से।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग मांगते हैं,और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट कर दे,औ हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कार्यों एवं कथनों से भी जो नरक से निकट करे।

हे अल्लाह!हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मुरदों पर कृपा फरमा और हम में से जो कठिनाई से जूझ रहे हैं,उन्हें सलामती प्रदान कर।

हे अल्लाह!हमारे धर्म को सही करदे,जो हमारे (दीन व दुनिया के) समस्त कार्य की रक्षा का कारण है और हमारी दुनिया को सही कर दे जिस में हमारी जीविका है और हमारे आखिरत को सही कर दे जिस में हमारा (अपनी मंज़िल की ओर) लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक पुण्य में वृद्धि का कारण बना दे और हमारे मृत्यु को हमारे लिए प्रत्येक दुष्टता से राहत बना दे।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भालई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलैमान अर्रसी

अनुवादक:

फैज़ुर रहमान हिफज़ुर रहमान तैमी